मुनि दर्शन

यदि आपके पुण्योदय से मुनिराज के दर्शन हो तो उनको हमें द्रव्य चढ़ाकर नमस्कार करना चाहिये। मुनिराजों के दर्शन करते समय 'सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यों नमः' बोलते हुए रत्नत्रय के प्रतीक तीन स्थानों पर चावल आदि द्रव्य चढ़ाकर मुनिराज को नमोस्तु एवं आर्यिका जी को वंदामि कहते हुए नमस्कार करना चाहिये, ऐलक क्षुल्लक व क्षुल्लिका जी को इच्छामि कहते हुए नमस्कार करना चाहिये। त्यागी वृतियों को हाथ जोड़कर 'वंदना' करना चाहिये।

नवधा भक्ति

साधुओं को आहार दान देने से पहले श्रावक-श्राविका जो नौ प्रकार से विनय प्रस्तुत करते हैं, उसे नवधा भक्ति कहते हैं।

१.पड़गाहन : अतिथि के आने के पूर्व पूर्ण शुद्धि व विवेक के साथ हाथों में कलश, श्रीफल, फल इत्यादि योग्य सामग्री सजाकर रखें। पड़गाहन के समय दाता शुद्ध वस्त्र पहन कर आचार्य आदि मुनि साधु को आता देख कर स्पष्ट कहें ''हे! स्वामिन नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु.....कई बार'' आर्यिकाओं के लिये कहें ''हे! माताजी वंदामि वंदामि वंदामि..... कई बार'' ऐलक, क्षुल्लक क्षुल्लिकाओं के लिए कहें ''हे! स्वामिन इच्छामि इच्छामि इच्छामि कई बार'' अत्र अत्र अत्र- यहां, तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठ-ठहरों मन शुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि, आहार जल शुद्ध है। बोलना चाहिए।

मुनियों को पड़गाहन के बाद अपना दायां हाथ मुनि की तरफ करते हुए तीन परिक्रमा करना चाहिये इसके बाद साधु से ग्रह प्रवेश करने का आग्रह करें।

२.उच्चासन : अतिथि से चौके में लगाये गये उच्चासन को ग्रहण करने की प्रार्थना करें।

३.पाद प्रक्षालन : मुनिराज के चरणों को एक थाली में रखकर प्रक्षालन करें तथा उस पवित्र जल को श्रावक श्राविका विनय पूर्वक अपने मस्तिष्क पर लगावें।

४.पूजन : पाद प्रक्षालन के पश्चात अष्ट द्रव्य से अतिथि की पूजन करें। १०८ के बाद जो भी मुनि आचार्य हो उनका नाम लेकर अर्घ चढ़ाये।(ॐ ह्रीं श्री १०८.....मुनिन्द्राय इत्यादि)

विधि :
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र अवतर, अवतर संवोषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री १०८..... मुनिन्द्राय अत्र मोक्षफल प्राप्तेय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैः चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले मम गृहे मुनिराज यजा महे॥

ॐ ह्रीं श्री १०८.....चरण कमलेभ्यों अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहाः।

५. नमस्कार : चौके में उपस्थित सभी श्रावक श्राविका, कहे : मुनिराज से नमोऽस्तु महाराज जी कहें। आर्यिका आदि को शुद्धि बोल कर यथायोग्य वंदामि इत्यादि कहें।

६. मन शुद्धि, ७. वचन शुद्धि ८. काय शुद्धि ९. आहार जल शुद्ध है। मुद्रिका छोड़ अंजलि बांध आहार ग्रहण कीजिये, ऐसा बोलना चाहिये।